शोध प्रतिवेदन

"टेलीविजन पर प्रसारित कार्टून चैनल का उच्च प्राथमिक स्तर के विद्यार्थियों के जीवन मूल्यों पर पड़ने वाले प्रभाव का अध्ययन।"

निर्देशिका
श्रीमती आरती गुप्ता
(व्याख्याता)

प्रस्तुतकर्त्री
नीरज गंगवाल
(एम.एड. छात्रा)

बियानी गर्ल्स बी.एड़ कॉलेज, जयपुर(राजस्थान)
(सत्र 2015-17)

प्रस्तावना–

आधुनिक युग क्रान्तिकारी परिवर्तनों का युग है जिससे जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में तीव्र गति से परिवर्तन हो रहे हैं। ये परिवर्तन वर्तमान, सामाजिक, सांस्कृतिक, नैतिक, आध्यात्मिक, वैज्ञानिक दृष्टिकोण व पर्यावरण तथा विश्व से सम्बन्धित है। यह परिवर्तन अपने अस्तित्व को कायम रखने व आगे बढ़ने की आवश्यक शर्त है। इन्हीं परिवर्तनों का प्रभाव शिक्षा व शिक्षण जगत पर भी पड़ा है। टेलीविजन एक इलेक्ट्रॉनिक उपकरण है। यह 200 एसी वोल्ट पर कार्य करता है।

भारत में 1982 को स्वतन्त्रता दिवस के दिन रंगीन टी. वी. का दौर शुरू हुआ और तभी से शैक्षणिक संस्थाओं में निराकरण के लिए इसका प्रारम्भ हुआ। टेलीविजन पर अनेक प्रकार के कार्यक्रम प्रसारित होते हैं। ये कार्यक्रम समाचार, नाटक, परिसंवाद, प्रतियोगिता, कार्टून आदि है। शिक्षण के नये आयामों में एक कार्टून चैनल मात्र मनोरंजन या संचार का साधन माना जाता है। बालक के सीखने सिखाने में टेलीविजन एक महत्वपूर्ण आयाम है। टेलीविजन श्रव्य–दृश्य साधन के अन्तर्गत आता है।

अतः बालकों से इसका लगाव लाजमी भी है। इस प्रकार टेलीविजन पर प्रसारित कार्टून चैनल वर्तमान समय में शिक्षा का महत्वपूर्ण आयाम व सम्प्रेषण का सफल साधन होने से जीवन में इसके प्रभाव व लोकप्रियता में भी वृद्धि हुई है। बालक की प्रवृत्ति अनुकरण द्वारा सीखने की होती है। यही अनुकरण धीरे–धीरे उनकी आदत बन जाती है और वह इसे अपने जीवन मूल्यों में समाहित कर लेता है। शिक्षण की प्रारम्भिक अवस्था में श्रव्य साधनों पर ज्यादा जोर दिया गया। कालान्तर में श्रव्य के साथ–साथ दृश्य की भी आवश्यकता शिक्षा व शिक्षण के क्षेत्र में महसूस होने लगी। वर्तमान समय में शिक्षा का महत्वपूर्ण आयाम व सम्प्रेषण का सफल साधन होने से जीवन में इसका महत्वपूर्ण स्थान हो गया है।

यह विचारधारा आज से कई वर्षों पूर्व तक प्रत्येक अभिभावक की मानसिकता थी। वर्तमान समय में यह मानसिकता बदल रही है कि बच्चों को खेल या खिलौनों से दूर रखा जाए। तकनीकी आक्रमण के कारण इन खिलौनों का आकार, स्वरूप व परिभाषा जरूर बदल गई है। अब विड़ियो गेम, इन्टरनेट, टी.वी. बालकों के खेल के साधन बन गए हैं। खेल बालकों में समूह भावना, नेतृत्व गुण, सहनशीलता, क्रियाशीलता आदि गुणों का विकास करते हैं। समूह में खेले जाने वाले खेल द्वारा मनोरंजन व आनन्द की अलग ही अनुभूति होती है।

वर्तमान में एकांकी परिवार व कामकाजी माता–पिता की स्थिति में बालक भी सामाजिक होने के बजाए एकान्तप्रिय होने लगे है। ऐसे में टेलीविजन बालकों का मित्र व साथी बनकर उभरा है। टेलीविजन पर प्रसारित काटूर्न चैनल चैनल बालकों का सबसे पसंद वाला चैनल है। टेलीविजन पर प्रसारित कार्टून चैनल का शैक्षिक जगत में महत्व बढ़ने के कारण इसका सबसे महत्वपूर्ण प्रभाव बच्चों पर पड़ा है। वर्तमान समय में एकल परिवार, कामकाजी, माता–पिता व अन्य कारणों व परिवेश के कारण बच्चे कार्टून चैनल से अधिक से अधिक जुड़ रहे हैं। वे अपना अधिकांश समय टी.वी. के सामने बिता रहे हैं। जिसका प्रभाव उनके आदर्शों, जीवन मूल्यों, व्यवहार, आचार–विचार, रहन–सहन पर पड़ रहा है। उनका सम्पूर्ण व्यक्तित्व इससे प्रभावित हो रहा है। बच्चों ने अनुकरण की प्रवृत्ति अधिक होती है। वह टी.वी. पर प्रसारित होने वाले कार्यक्रम की अच्छी–बुरी बातों को आत्मसात् करते है। वह कार्यक्रम के पात्रों को अपना आदर्श मानते है। स्वयं को उनकी जगह रखकर

कल्पना करते है। जबकि वास्तविक जीवन बिल्कुल उनके विपरीत होता है तो उसमें निराशा, तनाव व कुंठाा आदि उत्पन्न हो जाते है। कार्टून चैनल के कारण बच्चों के जीवन मूल्य प्रभावित होते है।

मूल्य शब्द रूचि, आनन्द, पसन्द, प्राथमिक कर्त्तव्य, नैतिक आदर्श, इच्छाएँ, आवश्यकताएँ और भविष्य में अनिच्छा तथा चुनने योग्य आदर्श मान्यताएँ होती है। जीवन मूल्य व्यक्ति की रूचियों, प्रेरणाओं एवं अभिवृत्तियों की ओर इंगित करते हैं। व्यक्ति के जीवन मूल्य इस बात का दर्पण होते है कि वे अपनी सीमित शक्ति एवं समय में क्या करना चाहते है।

बच्चे सामाजिक सम्बन्धों का निर्वाह भी उसी तरीके से करते है। जिस प्रकार से वे टेलीविजन पर प्रसारित कार्यक्रमों में देखते है। उनके जीवन मूल्यों पर विदेशी संस्कृति का प्रभाव पड़ रहा है। चैनल अपने कार्यक्रमों की लोकप्रियता बढ़ाने के लिए हमारी संस्कृति को गलत ढंग से तोड़–मरोड़ कर प्रदर्शित कर रहे है जो बालकों के व्यवहार व सामाजिक बुद्धि को प्रभावित कर रही है।

टेलीविजन भारतीय संस्कृति में निहित सद्भाव मूल्यों को प्रभावित कर जीवन में स्वार्थपरता व धनार्जन के मूल्यों को भर रहा है। कार्टून चैनल पर प्रसारित क्विज़, टर्निंग प्वॉइन्ट, परख, द वर्ल्ड दिस वीक आदि कार्यक्रमों के माध्यम से ज्ञानवर्धक सामग्री परोसी जा रही है जिससे बालकों का ज्ञानवर्धन व उनकी क्रियाशीलता बढ़ रही है और उनके जीवन मूल्यों को नयी दिशा प्राप्त हो रही है।

समस्या कथन –

''टेलीविजन पर प्रसारित कार्टून चैनल का उच्च प्राथमिक स्तर के विद्यार्थियों के जीवन मूल्यों पर पड़ने वाले प्रभाव का अध्ययन।''

अध्ययन के उद्देश्य –

प्रस्तुत अध्ययन के उद्देश्य निम्नांकित हैं –

1. टेलीविजन पर प्रसारित कार्टून चैनल का उच्च प्राथमिक स्तर के सरकारी विद्यालय के विद्यार्थियों के जीवन मूल्यों पर पड़ने वाले प्रभाव का अध्ययन करना।

2. टेलीविजन पर प्रसारित कार्टून चैनल का उच्च प्राथमिक स्तर के सरकारी विद्यालय के छात्र व छात्राओं के जीवन मूल्यों पर पड़ने वाले प्रभाव का तुलनात्मक अध्ययन करना।
3. टेलीविजन पर प्रसारित कार्टून चैनल का उच्च प्राथमिक स्तर के निजी विद्यालय के विद्यार्थियों के जीवन मूल्यों पर पड़ने वाले प्रभाव का अध्ययन करना।
4. टेलीविजन पर प्रसारित कार्टून चैनल का उच्च प्राथमिक स्तर के निजी विद्यालय के छात्र व छात्राओं के जीवन मूल्यों पर पड़ने वाले प्रभाव का तुलनात्मक अध्ययन करना।
5. टेलीविजन पर प्रसारित कार्टून चैनल का उच्च प्राथमिक स्तर के सरकारी व निजी विद्यालय के विद्यार्थियों पर पड़ने वाले प्रभाव का तुलनात्मक अध्ययन करना।

अध्ययन से सम्बन्धित परिकल्पनायें –

प्रस्तुत शोध में उद्देश्यों को ध्यान में रखते हुए निम्न परिकल्पनाओं का निर्माण किया गया है–

1. टेलीविजन पर प्रसारित कार्टून चैनल का उच्च प्राथमिक स्तर के सरकारी विद्यालय के छात्र व छात्राओं के जीवन मूल्यों पर पड़ने वाले प्रभाव में सार्थक अन्तर नहीं है।
2. टेलीविजन पर प्रसारित कार्टून चैनल का उच्च प्राथमिक स्तर के निजी विद्यालय के छात्र व छात्राओं के जीवन मूल्यों पर पड़ने वाले प्रभाव में सार्थक अन्तर नहीं है।
3. टेलीविजन पर प्रसारित कार्टून चैनल का उच्च प्राथमिक स्तर के सरकारी व निजी विद्यालय के विद्यार्थियों के जीवन मूल्यों पर पड़ने वाले प्रभाव में सार्थक अन्तर नहीं है।
4. टेलीविजन पर प्रसारित कार्टून चैनल का उच्च प्राथमिक स्तर के सरकारी विद्यालय के छात्रों व निजी विद्यालय के छात्रों के जीवन मूल्यों पर पड़ने वाले प्रभाव में सार्थक अन्तर नहीं है।

5. टेलीविजन पर प्रसारित कार्टून चैनल का उच्च प्राथमिक स्तर के सरकारी विद्यालय की छात्राओं व निजी विद्यालय की छात्राओं के जीवन मूल्यों पर पड़ने वाले प्रभाव में सार्थक अन्तर नहीं है।

अध्ययन में प्रयुक्त तकनीकी शब्दों की व्याख्या –

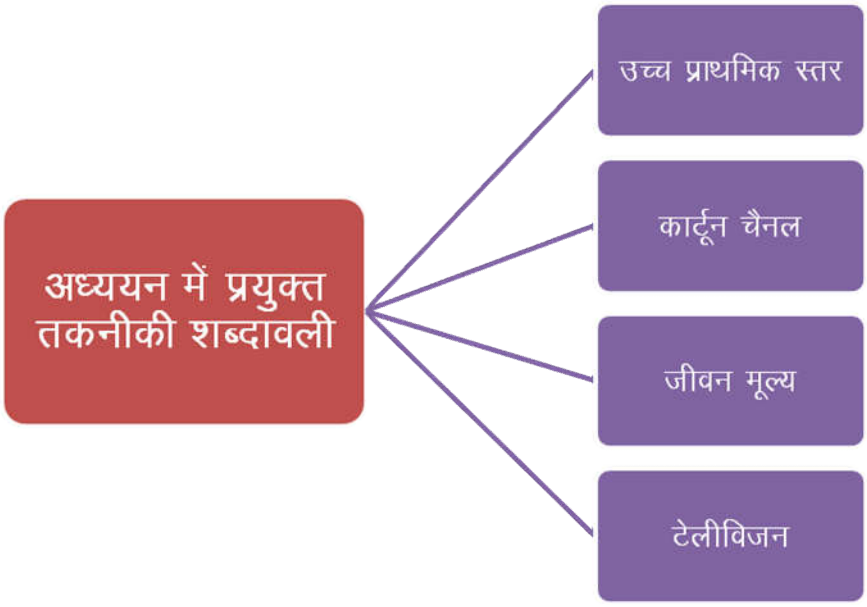

1. टेलीविजन–

टेलीविजन का शाब्दिक अर्थ है – ''दूर से देखना''। इसमें टेली का अर्थ है 'दूर' और विजन का अर्थ है 'दृश्य' अर्थात् दूर के दृश्यों को प्रत्यक्ष सामने देखना।

टेलीविजन दर्शकों के मध्य सही घटना, दृश्य एवं विवरण को यथावत् रखने में सफल है। सर्वप्रथम सन् 1936 में बी.पी. लन्दन के द्वारा इसका प्रादुर्भाव किया गया। शिक्षा जगत में इसका प्रयोग सर्वप्रथम 1958 में अमेरिका में विज्ञान विषय पढ़ाने के उद्देश्य से किया गया। टेलीविजन की स्थिति बिल्कूल वैसी ही है जैसे पूछा जाए कि कुआँ लाभदायक है या हानिकारक कुआँ मनुष्य की पानी की आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए खोदा जाता है परन्तु अगर कोई उसमें गिर जाए तो कुआँ क्या कर सकता है। इसी तरह टेलीविजन मनुष्य को लाभ देने के लिए बना है परन्तु यदि कोई उसमें सारा समय लगा रहे या उससे नकारात्मक व गलत बातें सीखकर अपना जीवन नष्ट कर ले तो टेलीविजन उसमें क्या कर सकता है।

2. कार्टून चैनल–

कार्टून शब्द दो भाषाओं से मिलकर बना है। इटालियन और डच। संसार में सर्वप्रथम कार्टून 1843 में जोन लीच ने बनाया। पिटर ऑर्नो मोर्डन कार्टून के फादर माने जाते हैं।

व्यंग्य चित्र, हास्कर रूपरेखा को हास्यमय बनाकर सामान्यतः चलचित्र व छायाचित्र को एक निश्चित अवधि के अन्तराल में प्रदर्शित करना जो व्यक्ति को उपहास और हास्कर क्रिया के रूप में दिखाता है। 1920–30 में टी.वी. पर बच्चों के लिए काटूर्न का प्रसारण हुआ। 1980 में कार्टून के विड़ियो, मुजियम आने लगे है। सर्वप्रथम 1980 के अन्त में कार्टून टेलीविजन का प्रसारण हुआ जिस पर राजनैतिक मुद्दों और खेलों को हास्यमय तरीकों से कार्टून के माध्यम से बताया गया।

3. उच्च प्राथमिक स्तर –

ऐसे विद्यालय जिनमें कक्षा 6 से 8 तक के विद्यार्थियों को शिक्षण कराया जाता है। उच्च प्राथमिक स्तर के विद्यालय कहलाते हैं। उच्च प्राथमिक स्तर में आते ही छात्र अपने बारे में कुछ धारणाएँ बनाने लग जाते है। विद्यालय में अपने मित्रों तथा शिक्षकों के साथ समायोजन स्थापित करता है। इस स्तर पर बालकों की आयु सामान्यतः 10 से 14 वर्ष तक होती है।

4. जीवन मूल्य –

शाब्दिक रूप से देखा जाये तो जीवन मूल्य को अंग्रेजी में "Life Value" कहते हैं। यह लैटिन भाषा के "Valur" से बना है जिसका आंग्ल भाषा में अर्थ ability, utility, importance है अर्थात् योग्यता, उपयोगिता व महत्व है।

"मूल्य सामाजिक रूप से स्वीकृत इच्छाएँ हैं।"

– प्रो० राधाकमल मुखर्जी

मूल्य एक विश्वास, आस्था का अनुभव है जिस पर व्यक्ति अभिमानित होता है जो विकल्पों में से बिना किसी प्रोत्साहन या धार्मिक विश्वास से चुनी होती है। अनुभवों के सामान्य सिद्धान्तों को जो समस्त जीवन जीने की विशिष्टता को जन्म देते हैं तथा उनके पथ प्रदर्शक के रूप में कार्य करते हैं, जीवन मूल्य कहलाते हैं।

"मूल्य शब्द रूचि, आनन्द, पसन्द, प्राथमिक कर्त्तव्य, नैतिक आदर्श, इच्छाएँ, आवश्यकताएँ और भविष्य में अनिच्छा तथा चुनने योग्य आदर्श मान्यताएँ होती हैं।"

–इंटरनेशनल एनसाइक्लोपीडिया

उपरोक्त परिभाषाओं के आधार पर कहा जा सकता है कि मूल्य समस्त वांछित व्यवहार का मानदण्ड है। मूल्य हमारे जीवन के दिशा–निर्देश सिद्धान्त है।

अध्ययन का महत्व –

बालक एक पौधे के समान है। वह प्रतिदिन विकास करता है। जैसे वातावरण में बालक रहेगा वैसा ही उसका विकास होगा, वैसा ही प्रभाव उसके जीवन मूल्यों पर पड़ेगा।

वर्तमान समय में विद्यार्थियों के समस्त क्रियाकलाप जैसे गृहकार्य पूरा न करना, विद्यालय में देरी से आना, बड़ों के प्रति सम्मान, व्यवहार का तरीका सभी कुछ टेलीविजन के कार्यक्रमों से प्रभावित होते हैं।

अतः अध्ययन का महत्व यही है कि बालकों में जिन मूल्यों का कमी है उन्हें पूरा कर ऐसे बालकों का निर्माण करें जिसमें शारीरिक, बौद्धिक, चारित्रिक, नैतिक, सामाजिक तथा बोध का समन्वय हो, उनमें नयी–नयी बातों को सीखने की जिज्ञासा, उसकी संतुष्टि तथा कोतुहल का समावेश भी अपेक्षित होना चाहिए। टेलीविजन पर प्रसारित कार्टून चैनल का प्राथमिक स्तर के विद्यार्थियों के जीवन मूल्यों पर पड़ने वाले प्रभाव को जानकर हम यह निश्चित कर सकते हैं कि हमें प्राथमिक स्तर के विद्यार्थियों को किस प्रकार के कार्यक्रम दिखाने चाहिए जिससे कि उनके जीवन मूल्यों पर सकारात्मक प्रभाव पड़े तथा उनमें जीवन मूल्य उच्च हो सके।

अध्ययन में प्रयुक्त अनुसन्धान विधि –

प्रस्तुत अध्ययन की प्रकृति एवं प्रस्तावित उद्देश्यों को देखते हुए इस अध्ययन में सर्वेक्षण विधि का प्रयोग प्रदत्त संकलन हेतु किया गया है।

अध्ययन के चर –

प्रस्तुत अध्ययन में निम्नलिखित चरों का प्रयोग किया गया है –

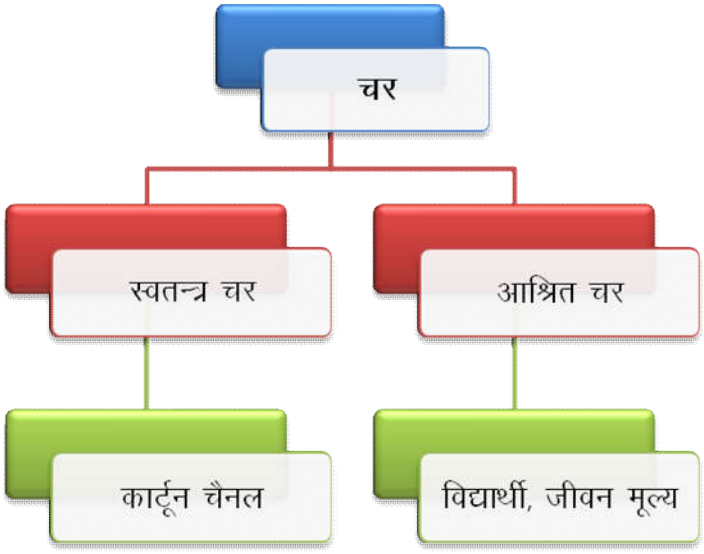

प्रदत्तों के स्त्रोत –

जयपुर जिले के उच्च प्राथमिक स्तर के राजकीय तथा निजी विद्यालयों के छात्र व छात्राओं को प्रदत्तों के स्त्रोत के रूप में लिया गया।

प्रदत्तों की प्रकृति –

प्रस्तुत लघु शोध में प्रदत्तों की प्रकृति मात्रात्मक व गुणात्मक प्रकार की है।

परिसीमन–

समय–सीमा को दृष्टि में रखते हुए अध्ययन के क्षेत्र का निम्नानुसार परिसीमन किया गया है –

क्षेत्र – प्रस्तुत अध्ययन में जयपुर जिले के चार विद्यालयों को लिया गया, जिसमें 2 सरकारी एवं 2 निजी विद्यालय है।

स्तर – प्रस्तुत अध्ययन में केवल उच्च प्राथमिक स्तर के विद्यार्थियों को ही सम्मिलित किया गया है।

विद्यार्थी – प्रस्तुत अध्ययन के लिए उच्च प्राथमिक स्तर के सरकारी व निजी विद्यालयों के 120 छात्र–छात्राओं को सम्मिलित किया गया है।

जनसंख्या –

प्रस्तुत अध्ययन में जयपुर जिले के उच्च प्राथमिक स्तर के दो सरकारी व दो निजी विद्यालयों का चयन जनसंख्या के रूप में किया गया।

न्यादर्श–

न्यादर्श के अन्तर्गत जयपुर जिले के उच्च प्राथमिक स्तर के 120 विद्यार्थियों का चयन किया गया है। प्रस्तुत अध्ययन में न्यादर्श का विवरण निम्न प्रकार से है

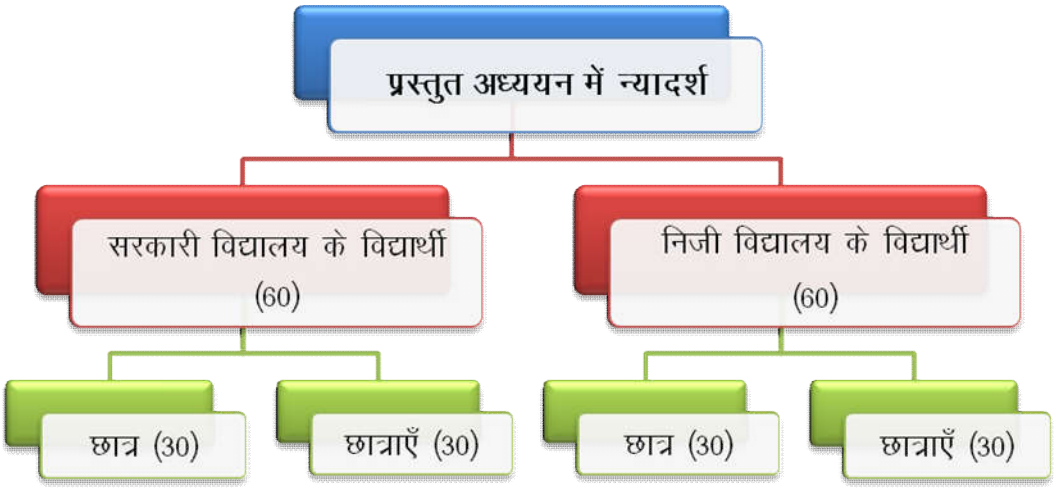

अध्ययन में प्रयुक्त शोध उपकरण –

प्रस्तुत अध्ययन में शोधकर्त्री ने स्वनिर्मित प्रश्नावली का प्रयोग आँकड़ों के संग्रहण हेतु किया गया है।

प्रयुक्त सांख्यिकी –

प्रस्तुत शोध कार्य में शोधकर्त्री द्वारा आँकड़ों के विश्लेषण हेतु निम्न सांख्यकीय विधियाँ अपनाई गई –

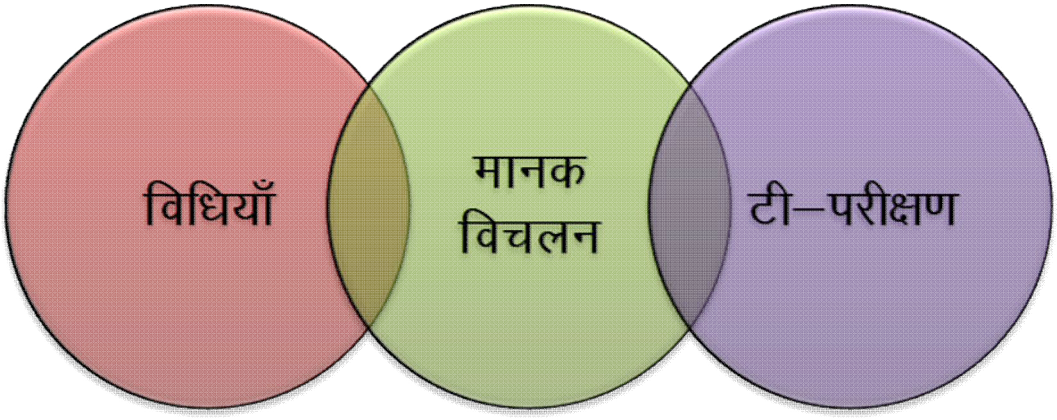

प्रदत्त संचयन व विश्लेषण –

आँकड़ों के संग्रह हेतु शोधकर्त्री जयपुर शहर के विभिन्न उच्च प्राथमिक स्तर के सरकारी व निजी विद्यालयों में गयी तथा विद्यालयों के प्रधानाचार्य से जाकर सम्पर्क किया और उन्हें शोध के विषय के बारे में संक्षिप्त जानकारी दी तथा अपने शोध कार्य को पूर्ण करने में सहयोग मांगा। इसके लिए विद्यालय के प्रधानाचार्यों व शिक्षकों से विद्यार्थियों पर परीक्षण करने की अनुमति मांगी। इसके बाद विद्यार्थियों से सम्पर्क किया विद्यार्थियों को प्रश्नावली प्रपत्र वितरीत किया और इसे भरने हेतु आवश्यक निर्देश दिये गये और कहा कि प्रस्तुत प्रश्नावली प्रपत्र टेलीविजन पर प्रसारित कार्टून चैनल का विद्यार्थियों के जीवन मूल्यों पर पड़ने वाले प्रभाव का पता लगाने के लिए है और इस प्रश्नावली में जीवन मूल्यों से सम्बन्धित 25 प्रश्न दिये गये हैं।

इसमें अन्तर के लिए कोई विकल्प नहीं दिया गया इसमें चित्र के माध्यम से वह अपने विचार प्रकट करेगा कोई भी उत्तर गलत नहीं है। आपके उत्तर शोधकर्त्री के कार्य हेतु उपयोगी है। यह जानकारी गोपनीय रखी जायेगी। अतः आपसे अनुरोध है कि आप निःसंकोच अपना उत्तर दे।

विद्यालयों ने अपना पूर्ण सहयोग प्रदान किया। चयनित सभी विद्यालयों में यही प्रक्रिया अपनायी गयी तथा वहाँ से सूचना प्राप्त की गई। प्रदत्तों के संचयन के पश्चात् सभी प्रश्नों की अलग–अलग सारणियाँ तैयार की गई एवं उनका विश्लेषण सारणी कर किया गया जिसको क्रमशः चतुर्थ अध्याय में दर्शाया गया है।

प्रस्तुत शोध से प्राप्त निष्कर्ष –

निष्कर्ष अनुसन्धान कार्य को पूर्णता प्रदान करते हैं। व्यवहारिक विज्ञान में अनुसन्धानकर्त्ता को सदा सावधान रहना चाहिए कि इसके निष्कर्ष पूर्णतः मौलिक है कि नहीं क्योंकि कभी–कभी परिणाम कुछ अवधारणाओं पर प्रसारित होते है। ऐसे परिणाम कभी पूरे नहीं होते। शोध कार्य अपने निष्कर्ष निकालता है तथा उसका सामान्यीकरण करता है।

सामान्यीकरण से तात्पर्य प्राप्त परिणामों के आधार पर इस प्रकार व्याख्या करना है कि न्यादर्श पर प्राप्त सम्पूर्ण जनसंख्या के लिए समान परिस्थितियों में अन्य घटनाओं पर भी लागू हो सके।

प्रस्तुत अध्याय में प्रदत्तों के विश्लेषण से जो परिणाम प्राप्त हुआ है, वह निम्न प्रकार से है –

परिकल्पना–1 : टेलीविजन पर प्रसारित कार्टून चैनल का उच्च प्राथमिक स्तर के सरकारी विद्यालय के छात्र व छात्राओं के जीवन मूल्यों पर पड़ने वाले प्रभाव में सार्थक अन्तर नहीं हैपरिकल्पना 1 में उल्लेखित परिणामों के आधार पर शून्य परिकल्पना उच्च प्राथमिक स्तर के सरकारी विद्यालयों के छात्र–छात्राओं में टेलीविजन पर प्रसारित कार्टून चैनल से जीवन मूल्यों पर पड़ने वाले प्रभाव में सार्थक अन्तर नही पाया जाता है। अतः यह परिकल्पना स्वीकृत की जाती है। क्योकि दोनो समूहों के मध्यमान व प्रमाणिक विचलन की तुलना करने पर टी अनुपात का मान 1.42 प्राप्त हुआ है जो कि स्वतंत्रता कोटी 58 के सार्थकता स्तर के मान 2.00 से कम है।

परिकल्पना–2 : टेलीविजन पर प्रसारित कार्टून चैनल का उच्च प्राथमिक स्तर के निजी विद्यालय के छात्र व छात्राओं के जीवन मूल्यों पर पड़ने वाले प्रभाव में सार्थक अन्तर नहीं हैपरिकल्पना 2 में उल्लेखित परिणामों के आधार पर शून्य परिकल्पना उच्च प्राथमिक स्तर के निजी विद्यालयों के छात्र–छात्राओं में टेलीविजन पर प्रसारित कार्टून चैनल से जीवन मूल्यों पर पड़ने वाले प्रभाव में सार्थक अन्तर नही पाया जाता है। अतः यह परिकल्पना स्वीकृत की जाती है। क्योकि दोनो समूहों के मध्यमान व प्रमाणिक विचलन की तुलना करने पर टी अनुपात का मान 0.15 प्राप्त हुआ है जो कि स्वतंत्रता कोटी 58 के सार्थकता स्तर के मान 2.00 से कम है।

परिकल्पना–3 :''टेलीविजन पर प्रसारित कार्टून चैनल का उच्च प्राथमिक स्तर के सरकारी व निजी विद्यालय के विद्यार्थियोंके जीवन मूल्यों पर पड़ने वाले प्रभाव में सार्थक अन्तर नहीं है।''परिकल्पना 3 में उल्लेखित परिणामों के आधार पर शून्य परिकल्पना उच्च प्राथमिक स्तर के सरकारी विद्यालयके विद्यार्थी व निजी विद्यालय के विद्यार्थी में टेलीविजन पर प्रसारित कार्टून चैनल से जीवन मूल्यों पर पड़ने वाले प्रभाव में सार्थक अन्तर नही पाया जाता है। अतः यह परिकल्पना स्वीकृत की जाती है। क्योकि दोनो समूहों के मध्यमान व प्रमाणिक विचलन की

तुलना करने पर टी अनुपात का मान 1.89 प्राप्त हुआ है जो कि स्वतंत्रता कोटी 118 के सार्थकता स्तर के मान 1.98 से कम है।

परिकल्पना–4''टेलीविजन पर प्रसारित कार्टून चैनल का उच्च प्राथमिक स्तर के सरकारी विद्यालय के छात्रों व निजी विद्यालय के छात्रों के जीवन मूल्यों पर पड़ने वाले प्रभाव में सार्थक अन्तर नहीं है।''परिकल्पना 4 में उल्लेखित परिणामों के आधार पर शून्य परिकल्पना उच्च प्राथमिक स्तर के सरकारी विद्यालयों व निजी विद्यालयों के छात्रों में टेलीविजन पर प्रसारित कार्टून चैनल से जीवन मूल्यों पर पड़ने वाले प्रभाव में सार्थक अन्तर नही पाया जाता है। अतः यह परिकल्पना स्वीकृत की जाती है। क्योकि दोनो समूहों के मध्यमान व प्रमाणिक विचलन की तुलना करने पर टी अनुपात का मान 0.57 प्राप्त हुआ है जो कि स्वतंत्रता कोटी 58 के सार्थकता स्तर के मान 2.00 से कम है।

परिकल्पना–5''टेलीविजन पर प्रसारित कार्टून चैनल का उच्च प्राथमिक स्तर के सरकारी विद्यालय की छात्राओं व निजी विद्यालय की छात्राओं के जीवन मूल्यों पर पड़ने वाले प्रभाव में सार्थक अन्तर नहीं है।''परिकल्पना 5 में उल्लेखित परिणामों के आधार पर शून्य परिकल्पना उच्च प्राथमिक स्तर के सरकारी व निजी विद्यालयों की छात्राओं में टेलीविजन पर प्रसारित कार्टून चैनल से जीवन मूल्यों पर पड़ने वाले प्रभाव में सार्थक अन्तर नही पाया जाता है। अतः यह परिकल्पना स्वीकृत की जाती है। क्योकि दोनो समूहों के मध्यमान व प्रमाणिक विचलन की तुलना करने पर टी अनुपात का मान 1.92 प्राप्त हुआ है जो कि स्वतंत्रता कोटी 58 के सार्थकता स्तर के मान 2.00 से कम है।

शैक्षिक निहितार्थ :–

समग्र दृष्टि से शोधकर्त्री ने सुझावों को महत्वपूर्ण क्षेत्रों में विभक्त किया है –

(1) नीति–निर्माताओं के लिए –

नीति–निर्माताओं को चाहिए कि वो कार्टून चैनल पर प्रसारित होने वाले कार्यक्रमों के प्रसारण से पूर्व पूरी जाँच करें जो कि उनमें दिखाई जाने वाले पटकथा, पात्रों, दृश्यों में ऐसे तथ्यों को न दिखाया गया हो जो कि हमारी सांस्कृतिक व सामाजिक मूल्यों को गलत ढंग से पेश कर रहे हो।

ऐसे कार्यक्रमों के प्रसार की अनुमति न दे जिनमें अश्लीलता, हिंसा, आक्रामकता का अत्यधिक प्रयोग किया गया हो तथा ऐसे चैनल पर प्रतिबन्ध लगाए जो कि इस तरह के कार्यक्रमों का प्रसारण करते है।

निर्माताओं को ऐसे कार्यक्रमों का निर्माण करना चाहिए जो सामाजिकता चेतना, जागरूकता व हमारी मानसिकता को विस्तृत करने में महत्ती भूमिका निभा सकते हो। अतः ऐसे सामाजिक कार्यक्रमों के द्वारा विद्यार्थियों को समाज से जोड़ा जा सकता है तथा उनके जीवन मूल्यों को उच्च बनाया जा सकता है।

शिक्षकों के लिए –

प्रस्तुत शोध के निष्कर्षों के आधार पर शिक्षक बालकों को ऐसे कार्यक्रम देखने के लिए प्रोत्साहित करे जो विद्यार्थियों के शैक्षिक मूल्यों को श्रेष्ठ बनाने की दृष्टि से उपयोगी हो। टी.वी. के बहुत से कार्यक्रम जनमत निर्माण के सशक्त साधन है। अध्यापक कार्टून चैनल से प्रसारित की गई सूचनाओं, जानकारियों, कहानियों, कविताओं में दी गई शिक्षा को अपने शिक्षण से जोड़ सकते हैं तथा अपने शिक्षण को प्रभावी बना सकते है तथा सहायक सामग्री के रूप में उपयोग कर सकते है।

टेलीविजन के विभिन्न चैनल पर प्रसारित होने वाले शैक्षिक कार्यक्रमों का प्रसारण विद्यालय परिसर में करवाकर विद्यार्थियों के ज्ञान व सूचना के क्षेत्र को व्यापक बनाया जाये।

अभिभावकों के लिए –

बालकों का सबसे अधिक समय अपने अभिभावकों के बीच ही गुजरता है और ये ही बालकों के सबसे अधिक नजदीक होते है। अतः अभिभावकों को चाहिए कि वो बालकों की टी.वी. देखने की समय सीमा निर्धारित करे। अभिभावक बालकों को ऐसे पारिवारिक धारावाहिकों को देखने के लिए प्रोत्साहित करेजिनके माध्यम से बालकों में परिवार के प्रति आदर एवं सम्मान के मूल्य विकसित करवाये जा सके। टी.वी. धार्मिक, अंधविश्वासों को दूर करने का सबसे सशक्त माध्यम है। अभिभावक बच्चों को पौराणिक, ऐतिहासिक, सांस्कृतिक, सामाजिक कार्यक्रम देखने के लिए प्रेरित करें जिससे उनमें बड़ों के प्रति सम्मान, न्याय व सत्य बोलने जैसी उदात्त भावनायें जाग्रत हो सके और जीवन मूल्य उच्च हो सके। टी.वी. कार्यक्रमों के द्वारा

बालकों में राष्ट्र प्रेम व देशभक्ति जैसे राष्ट्रीय मूल्यों का विकास करवाया जा सकता है।

भावी शोध हेतु सुझाव–

डॉ० राधाकृष्णन के अनुसार देश का भविष्य विद्यार्थियों के कन्धों पर होता है अर्थात् आज के बालक ही देश के कर्णधार है। अतः देश के समुचित विकास के लिए आवश्यक है कि बालकों को शिक्षा के साथ–साथ जीवन मूल्यों से भी अवगत कराया जाये।

वर्तमान समय में टी.वी., मोबाईल, नेट, विडियो गेम आदि का प्रभाव समाज पर अत्यधिक पड़ रहा है। अतः बालक भी इससे अछूते नहीं है। मनोरंजन के इन सभी संसाधनों द्वारा बच्चों के जीवन मूल्यों पर प्रभाव पड़ रहा है। अतः कार्टून चैनल वह साधन है जो बालकों में जीवन मूल्यों का विकास कर सकता है।

प्रस्तुत अध्ययन के परिणामों को देखते हुए यह आवश्यक हो जाता है कि सम्बन्धित विषय का अन्य अध्यापन किये जाये। शोधकर्त्री ने यह अपना कर्त्तव्य समझा कि सम्बन्धित विषय के अनुसन्धानकर्त्ताओं को अपने सुझावों से अवगत कराया जाये। भावी अनुसन्धान के लिये दिये गये सुझाव निम्न हैं –

(1) यह शोध केवल 120 विद्यार्थियों पर किया गया है। इससे बड़ा न्यादर्श लेकर भी किया जा सकता है।

(2) इस शोध कार्य में सरकारी व निजी विद्यालय के विद्यार्थियों पर अध्ययन किया गया है। इसे ग्रामीण व शहरी विद्यार्थियों पर भी किया जा सकता है।

(3) इस अध्ययन को महाविद्यालय एवं विश्वविद्यालय के विद्यार्थियों पर किया जा सकता है।

(4) इस शोध कार्य में जयपुर जिले के सरकारी व निजी विद्यालय के विद्यार्थियों को लिया गया है। इसे राजस्थान या प्रान्तों के जिलों या अन्य स्तर पर भी किया जा सकता है।

(5) आवासीय व गैर आवासीय विद्यालयों के विद्यार्थियों पर भी यह अध्ययन किया जा सकता है।

(6) कार्टून चैनल का विद्यार्थियों के पारिवारिक वातावरण पर पड़ने वाले प्रभाव का अध्ययन कर सकते है।

(7) प्रस्तुत अध्ययन में केवल उच्च प्राथमिक स्तर के विद्यार्थियों का ही चयन किया गया है। इसमें अन्य स्तर भी शामिल किये जा सकते है।

(8) टी.वी. के प्रभाव में शैक्षिक स्तर की भूमिका महत्ता हो सकती है। अतः इन चरों के प्रभाव के अध्ययन हेतु प्रयास किया जाना चाहिए।

प्रस्तुत शोध कार्टून चैनल का विद्यार्थियों के जीवन मूल्यों पर कितना प्रभाव पड़ता है, का अध्ययन है। इस समस्या ने स्वयं शोधकर्त्री को प्रेरित किया है। एक अध्यापिका के रूप में और एक शोधकर्त्री के रूप में इस अध्ययन को मैं अपनी सफलता मानती हूँ व आशा करती हूँ कि यह अध्ययन औरों के दृष्टिकोणों को प्रभावित करेगा।

प्रस्तुत शोध के परिणामों को अन्तिम सत्य नहीं माना जाए, इस क्षेत्र में शोध करने के लिए शोध प्रबन्धन सम्बन्धित साहित्य का कार्य भी किया जा सकता है, जिससे इस क्षेत्र में अधिक विस्तृत, गहन एवं वस्तुनिष्ठ निष्कर्षों को उठाया जा सके। शोधकर्त्री यह आशा व्यक्त करती है कि यदि यह लघु शोध प्रबन्ध आगे अन्य अनुसन्धानकर्त्ताओं को अध्ययन हेतु प्रेरित कर शिक्षा जगत को लाभान्वित कर सके तो वह अपने प्रयास को सफल एवं सार्थक मानेगी।

सारांश –

निष्कर्ष रूप में कहा जा सकता है कि कार्टून चैनल का उच्च प्राथमिक स्तर के विद्यार्थियों में जीवन मूल्य उपयुक्त मात्रा में पाये गये हैं एवं छात्र व छात्राओं के जीवन मूल्यों में सार्थक अन्तर भी नहीं है। परन्तु जीवन मूल्यों को उच्च बनाये रखने के लिए विद्यार्थियों को कार्टून चैनल को देखने के लिए किया जाए। इस कार्य के लिए आवश्यक है कि कार्टून चैनल संचालक, अभिभावक व अध्यापक सभी जागरूक हों, क्योंकि जब तक कार्टून चैनल संचालक अपने कार्टून चैनल प्रोग्राम में जीवन मूल्यों को सम्मिलित नहीं करेंगे, अभिभावक तथा अध्यापक उन श्रेष्ठ कार्टून चैनल प्रोग्राम को देखने के लिए विद्यार्थियों को प्रेरित नहीं करेंगे तब तक कार्टून चैनल को देखने के पश्चात् विद्यार्थियों के जो जीवन मूल्य उत्कर्ष की ओर जाते हैं, वे उत्कर्ष की ओर जाने से रूक जायेंगे। अतः यह कहा जा सकता है कि कार्टून चैनल के माध्यम से उच्च प्राथमिक स्तर के विद्यार्थियों के जीवन मूल्य उच्च बन सकते हैं।